क्या चम्बल भी सरस्वती की तरह लुप्त हो जाएगी?

डॉ. रामप्रताप गुप्ता

पचास के दशक में मालवा की जीवन रेखा कही जाने वाली नदी चम्बल पर मध्यप्रदेश और राजस्थान की संयुक्त परियोजना के माध्यम से तीन बांध बनाए गए थे और उनमें सबसे प्रमुख बांध गांधी सागर था। तत्कालीन विशेषज्ञों द्वारा गांधीसागर बांध स्थल पर पानी की आमद का अनुमान 2.68 एम.ए.एफ. के बराबर लगाया था, परन्तु पता नहीं किन कारणों से बांध निर्माताओं ने 6.28 एम.ए.एफ. अर्थात दुगनी से अधिक क्षमता वाले जलाशय का निर्माण किया। इस आवश्यकता से कहीं अधिक बड़े जलाशय के निर्माण के साथ ही उन्होंने इसे अधिक से अधिक भरने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश पर यह निर्णय भी थोपा कि आगे से वह चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र में किसी सतही सिंचाई योजना का निर्माण नहीं करेगा। इस बात का आकलन किया जाना चाहिए कि इस प्रतिबंध का चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र और स्वयं चम्बल के अस्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

मालवा में 22,500 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र में सतही सिंचाई योजनाओं पर रोक तो लग गई परन्तु समय के साथ सिंचाई की मांग बढ़ना तो स्वाभाविक था। और उस बढ़ती मांग की पूर्ति का सारा बोझ भूजल स्रोतों पर आ पड़ा। परिणाम यह हुआ कि बांध निर्माण से लेकर आज तक की अवधि में सिंचाई हेतु भूजल के दोहन में 4 गुना वृद्धि हुई है। भूजल का दोहन तो 4 गुना बढ़ा परन्तु उसके पुनर्भरण हेतु तालाबों, चेक डैम आदि का निर्माण करना तो दूर रहा, समुचित देखरेख के अभाव में इसी अवधि में मालवा में तालाबों की संख्या 28 प्रतिशत कम हो गई। इस तरह चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र के भूजल भण्डार बढ़ते दोहन तथा घटते पुनर्भरण के शिकार हो गए। परिणामस्वरूप भूजल स्तर समय के साथ गिरता ही गया। सिंचाई की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति उनसे संभव ही नहीं रही। सरकार की विकृत नीतियों के कारण किसान सतही सिंचाई योजनाओं तथा भूजल के एकांगी दोहन को बाध्य हुए। और इस अतिदोहन के कारण भूजल भण्डारों के समाप्त होते जाने से वे सिंचाई के दोनों स्रोतों से वंचित हो गए। उनके समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया।

मजबूर होकर इन किसानों ने नदी, नालों, निस्तारी तालाबों आदि से पानी पम्प करके सिंचाई करना शुरू कर दिया। चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र में इस स्रोत से कितनी सिंचाई हो रही है, इसके आंकड़े तो किसी के पास नहीं हैं, परन्तु पूरे मालवा में नदी, नालों आदि से सीधे पानी पम्प कर सिंचित क्षेत्र के आकार में 64 गुना वृद्धि हुई है। मालवा का क्षेत्रफल चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र से दुगना है। कल्पना की जा सकती है कि चम्बल के जलग्रहण क्षेत्र में तो इस स्रोत से सिंचित क्षेत्र में इससे अधिक वृद्धि हुई होगी क्योंकि यह सतही सिंचाई योजनाओं पर प्रतिबंध का शिकार था। मालवा में नदी नालों से पम्प कर सिंचाई हेतु प्रयुक्त पानी की मात्रा 3.4 एम.ए.एफ. रही, ऐसे में यह माना जा सकता है कि चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र में यह इसके आधे से कुछ अधिक अर्थात करीब 2

एम.ए.एफ. के बराबर रहा होगा।

चम्बल और उसकी सहायता नदियों के पानी का औसतन 3.5 एम.ए.एफ. पानी तो आगे की ओर स्थानांतरित हो जाता है और 2 एम.ए.एफ. पानी किसानों के द्वारा सिंचाई में प्रयुक्त कर लिया जाता है। इस तरह चम्बल और उसकी सहायक नदियां कुल मिलाकर 5.5 एम.ए.एफ. पानी से वंचित हो जाती हैं। चम्बल के 22,500 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में औसत वर्षा 85 से.मी. होती है। अतः इस क्षेत्र को वर्षा से औसतन 15.5 एम.ए.एफ. पानी प्राप्त होता है। इस पानी में से वर्षा पूर्व की सूखी मिट्टी को गीला करने के लिए 39.3 प्रतिशत, तात्कालिक वाष्पीकरण के रूप में नष्ट 16.7 प्रतिशत एवं भूजल भण्डारों के लिए प्रयुक्त 11.9 प्रतिशत पानी कम कर दें तो सतही जल के रूप में 32.9 प्रतिशत पानी ही बचता है। अर्थ यह हुआ कि चम्बल के जल ग्रहण क्षेत्र की नदियों में बहने के लिए 15.5 एम.ए.एफ. का एक तिहाई अर्थात 5.1 एम.ए.एफ. पानी ही उपलब्ध होता है।

दूसरी ओर गांधी सागर बांध के माध्यम से 3.5 एम.ए.एफ पानी आगे स्थानांतरित हो जाता है और 2 एम.ए.एफ. किसानों द्वारा सिंचाई हेतु सीधे पम्प कर लिया जाता है, तो चम्बल और उसकी सहायक नदियों में वर्षा पश्चात पानी के बहने का प्रश्न ही कहां उठता है? लिहाज़ा ये बारहमासी नदियां वर्षा के तत्काल पश्चात ही सूखने लग गई हैं।

गिरते भूजल स्तर एवं नदी-नालों का वर्षा के तत्काल पश्चात ही सूख जाना, इन दो कारणों से इस पूरे क्षेत्र की मिट्टी में नमी में भारी गिरावट आ गई है। वैसे भी रासायनिक खाद के बढ़ते उपयोग के चलते मिट्टी में जैविक अंश की कमी के कारण उसकी जल धारण क्षमता भी गिर गई थी। इन सब कारणों से मिट्टी की नमी में गिरावट के कारण उसका तेज़ी से अपरदन हो रहा है और यह प्रदेश मरुस्थलीकरण की दिशा में अग्रसर हो रहा है।

आज मालवा एवं चम्बल जिस प्रक्रिया से गुज़रने को बाध्य हैं, ठीक उसी प्रक्रिया से हज़ारों वर्ष पूर्व सरस्वती नदी भी गुज़री थी। भूकम्प के कारण सरस्वती नदी में मिलने वाली उसकी सहायक नदियों घग्घर आदि का रास्ता बदल गया था और उनका पानी सरस्वती नदी में आना बंद हो गया था। परन्तु सरस्वती के पानी का दोहन तो यथावत रहा। परिणामस्वरूप सरस्वती नदी मात्र एक ऐतिहासिक वस्तु बनकर रह गई। चम्बल भी भिन्न कारणों से ठीक उसी प्रक्रिया से गुज़र रही है। चम्बल नदी भी सरस्वती नदी की तरह ही लुप्त न हो जाए, इस हेतु हमें तत्काल आवश्यक उपाय करने पड़ेंगे। अगर हमने इस समय उपयुक्त कदम नहीं उठाए तो इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता 150 रुपए

द्वैवार्षिक सदस्यता 275 रुपए

त्रैवार्षिक सदस्यता 400 रुपए

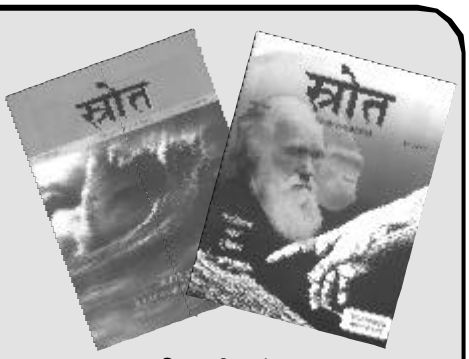

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

एकलव्य, ई-7/ एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462 016

के पते पर भेजें।